FRIDAY
WEEK 28

हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G. II sem
विषय— स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में वैचारिक द्वन्द्व

परिवर्तन की कड़ी चोट, जैसे जीवन में सहनी पड़ती है, वैसे ही साहित्य को भी। परिवर्तन एक क्रमिक प्रक्रिया है, जिससे बचा नहीं जा सकता है। आजादी आई तो खास किस्म की मुक्ति हमें मिली। कई वर्षों का सपना पूरा हुआ, हमने भी कुछ सपने संजोये। कुछ समय इन सपनों को सच्चाई में बदलने की प्रतीक्षा में बीता। देश-विदेश, राष्ट्रीय - अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हम मानवत का राग अलापते रहे। अहिंसा, क्षमा और तटस्थ के हथियारों से लैस होकर अपनी जिन्दगी तो जीते रहे। यही वह बिन्दु था जब हमें, हमारी प्रकृति और शक्ति का पुनर्मूल्यांकन करने का अवसर मिल कहने का तात्पर्य है कि आजादी के पश्चात जी बदला, राजनीतिक शक्ति बदली और ~~बदली~~ बदले हुए समस्त परिवेश के प्रभाव से साहित्य भी अपने को बचा नहीं पाया।

प्राय: समीक्षकों की धारणा है कि स्वतंत्रोत्तर महिला का लक्ष्य समाजोन्मुख क्षेत्र, सामाजिक तनाव को झेलकर, सामाजिक मूल्यों से काव्य-संस्कार पाकर सामाजिक ~~वैषम्य~~ वैषम्य और कुण्ठाओं को वाणी देना है। स्वतंत्रोत्तर भारत की आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति से मोहभंग कुण्ठा का जो वातावरण बना था, उसी सबसे अधिक कटु अनुभूति मध्य-वर्ग तथा निम्न-वर्ग के वेतनभोगी समाज को हुई थी। अपने समकालीन जीवन को वे किस मानसिकता से ग्रहण कर रहे थे, वह संघर्षमयी थी। परम्परागत मान्यताओं से उनका विश्वास उठ गया था। 'जेहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए'..... की भावना उन्हें मूर्खतापूर्ण प्रतिक्रियावादी जड़ता लगती थी। भाग्यवाद, नियतिवाद आदि की समस्त कल्पनाएँ उनके बौद्धिक-विमर्श के आगे मिथ्या सिद्ध होती थी। लक्ष्मीकांत वर्मा ने लिखा है – 'आज का जीवन न तो किसी अतिवादी संकीर्णता में

पनप सकता है और न ही प्रतिक्रियावादी भाग्यवाद के आधार पर विकसित हो सकता है। वस्तुतः आज का सच्चा दृष्टिकोण उस विद्रोह से विकसित होता है जहाँ शासन और समाज के चक्र में मनुष्य का अस्तित्व सारहीनता सा प्रतीत होता है।

विद्रोह की भावना का उदय सबसे पहले आर्थिक विपन्नता से होता है। यों तो मानवीय संवे... में आत्मसम्मान ही प्रथम है और जिस स्थिति, ... या परिवेश से आत्मसम्मान का हनन होता है, उसी से विद्रोह शुरू होता है, किन्तु दो शताब्दि... की गुलामी ने भारतीय जनता के मानस में आत्म... सम्मान से अधिक क्षुधा जगाई है। क्षुधा निवा... के लिए किए गये प्रयत्न यदि असफल रहते ... तो सामाजिक स्थितियाँ तथा शासन की व्यवस्था से जूझने का मन करता है। ब्रिटिश शासन का... पूँजीपति वर्ग का जिस रूप में गठन हुआ वह स्वाधीनता प्राप्ति के बाद और अधिक सक्षम हो गया। पूँजीवाद के उस अभिशाप को उस यु... के कवियों ने पूरी तरह उजागर किया। यदि ... विषय में संबद्ध कविताओं का संकलन तैयार ...

किया जाय तो शायद शताधिक कविताएँ ऐसी होंगी जो अपनी सार्थकता के लिए सदैव स्मरण की जायेंगी। केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, गिरिजा कुमार माथुर, कैलाश वाजपेयी, रामदरश मिश्र, प्रभाकर माचवे, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, लक्ष्मीकांत वर्मा, भारतभूषण अग्रवाल आदि के कविता संग्रहों में अनेक कविताएँ हैं जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से उत्पन्न विक्षोभ और विद्रोह को बड़ी सटीक भाषा में व्यक्त करती है। नयी कविता का संस्करण जिस वातावरण में निर्मित हुआ था वह परवर्ती तथाकथित नयी कविता से पूर्णतया सम्बद्ध नहीं रहा। प्रगतिवादी विचारधारा से कुछ आगे बढ़कर यथार्थ को अंकित करने की यह भूमिका स्वतंत्रोत्तर कविता में अधिक सशक्त में निभाई गई है।